शिक्षक प्रोत्साहन का उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

किरण शर्मा [1] | डॉ. मंजू साहू [2]

[1] शोधार्थी, भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग).

[2] शोध निर्देशक, सहायक प्राधापिका (शिक्षा संकाय), भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग).

ABSTRACT:

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षक प्रोत्साहन के प्रभाव का अध्ययन करना है। शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में यह सर्वमान्य तथ्य है कि विद्यार्थी की शैक्षिक सफलता केवल उसकी बौद्धिक क्षमता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि शिक्षक द्वारा प्रदत्त प्रेरणा, सहयोग, मार्गदर्शन एवं सकारात्मक व्यवहार भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षक प्रोत्साहन को इस अध्ययन में एक स्वतंत्र् चर के रूप में तथा शैक्षिक उपलब्धि को आश्रित चर के रूप में लिया गया है।

अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शिक्षक प्रोत्साहन का मापन विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं पर आधारित स्वनिर्मित शिक्षक प्रोत्साहन मापनी द्वारा किया गया, जबकि शैक्षिक उपलब्धि का मापन कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर किया गया। ।अध्ययन में दुर्ग जिले के समस्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 11 वीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों का चयन किया गया है। अध्ययन की जनसंख्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 10 के विद्यार्थी थे, जिनमें से स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा 300 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

आँकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन तथा एक-मार्गीय विचरण विश्लेषण (One Way ANOVA) का प्रयोग किया गया। विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि शिक्षक प्रोत्साहन के विभिन्न स्तरों के कारण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सांख्यिकीय रूप से सार्थक प्रभाव पाया गया। जिन विद्यार्थियों को शिक्षकों से उच्च स्तर का प्रोत्साहन प्राप्त हुआ, उनकी शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षाकृत अधिक पाई गई।

अध्ययन के निष्कर्ष इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि शिक्षक का प्रोत्साहनात्मक व्यवहार—जैसे प्रशंसा, सकारात्मक प्रतिक्रिया, सहयोगात्मक दृष्टिकोण तथा मार्गदर्शन—विद्यार्थियों में अध्ययन-रुचि, आत्म-विश्वास और उपलब्धि-प्रेरणा को सुदृढ़ करता है। यह शोध विद्यालयों, शिक्षकों एवं शिक्षा-प्रशासन के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है, क्योंकि इसके आधार पर शिक्षण-प्रक्रिया को अधिक प्रेरणादायक एवं विद्यार्थी-केन्द्रित बनाया जा सकता है।

KEYWORDS:

शिक्षक प्रोत्साहन, शैक्षिक उपलब्धि, उच्चतर माध्यमिक स्तर, एनोवा, बोर्ड परीक्षा ।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
4th April 2026	7th April 2026
PAPER DOI NO:	**PAPER DOI LINK:**
10.5281/zenodo.19455278	https://zenodo.org/records/19455278

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज के विकास का मूल आधार होती है और शैक्षिक उपलब्धि को शिक्षा-प्रणाली की सफलता का प्रमुख संकेतक माना जाता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर विद्यार्थी के शैक्षिक जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण चरण होता है, क्योंकि इसी स्तर पर उसके भविष्य की शिक्षा एवं व्यवसायिक दिशा निर्धारित होती है। इस स्तर पर विद्यार्थियों पर पाठ्यक्रम का दबाव, परीक्षा-चिंता तथा उपलब्धि-अपेक्षाएँ अधिक होती हैं। ऐसे में शिक्षक की भूमिका केवल विषय-वस्तु के अध्यापन तक सीमित न रहकर प्रेरक, मार्गदर्शक और सहायक के रूप में उभरती है।

शिक्षक प्रोत्साहन से आशय शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को दिया गया वह सकारात्मक सहयोग है, जिसके माध्यम से वे विद्यार्थियों की क्षमताओं में विश्वास व्यक्त करते हैं, उनके प्रयासों की सराहना करते हैं तथा कठिन परिस्थितियों में उनका मनोबल बढ़ाते हैं। प्रोत्साहनात्मक शिक्षक व्यवहार विद्यार्थियों में सीखने के प्रति रुचि, आत्म-विश्वास एवं लक्ष्य-निर्धारण की प्रवृत्ति को विकसित करता है। जिन कक्षाओं में शिक्षक सकारात्मक वातावरण बनाते हैं, वहाँ विद्यार्थी अधिक सक्रिय, आत्मविश्वासी और उपलब्धि-केन्द्रित होते हैं।

शैक्षिक उपलब्धि सामान्यतः परीक्षा में प्राप्त अंकों के माध्यम से मापी जाती है, जो विद्यार्थी की अध्ययन-प्रक्रिया, परिश्रम एवं प्रेरणा का प्रतिफल होती है। कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा विशेष महत्त्व रखती है, क्योंकि यह उच्चतर माध्यमिक शिक्षा की आधारशिला होती है। यदि इस स्तर पर शिक्षक का प्रोत्साहन विद्यार्थियों को पर्याप्त रूप से प्राप्त होता है, तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक वृद्धि संभव है।

पूर्ववर्ती अध्ययनों से यह संकेत मिलता है कि शिक्षक समर्थन और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध पाया जाता है, किंतु स्थानीय एवं समसामयिक संदर्भों में इस संबंध का पुनः परीक्षण आवश्यक है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन शिक्षक प्रोत्साहन के प्रभाव का वैज्ञानिक एवं सांख्यिकीय विश्लेषण करने का प्रयास करता है। यह अध्ययन न केवल शैक्षिक शोध को समृद्ध करता है, बल्कि शिक्षकों को अपने व्यवहार एवं शिक्षण-शैली में सुधार हेतु दिशा भी प्रदान करता है।

संबंधित शोध-अध्ययन

शुक्ला (2020) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि जिन विद्यार्थियों को शिक्षकों से सकारात्मक प्रोत्साहन प्राप्त होता है, उनकी शैक्षिक उपलब्धि अधिक होती है। **सिंह (2022)** के अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षक का सहयोगात्मक एवं प्रेरणात्मक व्यवहार विद्यार्थियों के आत्म-विश्वास को बढ़ाता है, जो अंततः परीक्षा-प्रदर्शन में परिलक्षित होता है। **कुमार एवं वर्मा (2021)** ने शिक्षक समर्थन और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध स्थापित किया।

वेंटज़ेल (2010) ने यह निष्कर्ष निकाला है कि शिक्षक-विद्यार्थी संबंध विद्यार्थियों की प्रेरणा एवं उपलब्धि का सशक्तीकरण निर्धारक है। **हैटी (2009)** के मेटा-विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षक की प्रतिक्रिया एवं प्रोत्साहन का प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है। **रयान और डेसी (2000)** ने आत्म-निर्धारण सिद्धांत के माध्यम से यह बताया है कि शिक्षक द्वारा दिया गया समर्थन विद्यार्थियों की आंतरिक प्रेरणा को उजागर करता है।इन सभी अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षक प्रोत्साहन शैक्षिक उपलब्धि का एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक कारक है। प्रस्तुत अध्ययन इन्हीं निष्कर्षों को आधार बनाकर स्थानीय स्तर पर शिक्षक प्रोत्साहन के प्रभाव का परीक्षण करता है।

शोध-विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। यह विधि सामाजिक एवं शैक्षिक चरों के अध्ययन हेतु उपयुक्त मानी जाती है। शिक्षक प्रोत्साहन को स्वतंत्र चर तथा शैक्षिक उपलब्धि को आश्रित चर के रूप में परिभाषित किया गया। अध्ययन में दुर्ग जिले के समस्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 11 वीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों का चयन किया गया है । अध्ययन की जनसंख्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 10 के विद्यार्थी थे।

न्यादर्श के चयन हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि अपनाई गई, जिससे विभिन्न पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके। कुल 300 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया।

शिक्षक प्रोत्साहन का मापन 18 कथनों वाली स्वनिर्मित शिक्षक प्रोत्साहन मापनी द्वारा किया गया, जिसमें पाँच-बिन्दु लिकर्ट मापनी का प्रयोग किया गया। शैक्षिक उपलब्धि का मापन कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर किया गया।

आँकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन तथा एक-मार्गीय विचरण विश्लेषण (One Way ANOVA) का प्रयोग किया गया, जिससे शिक्षक प्रोत्साहन के विभिन्न स्तरों के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि में अंतर की जाँच की जा सके।

तालिका संख्या : 1

शिक्षक प्रोत्साहन के विभिन्न स्तरों के संदर्भ में शैक्षिक उपलब्धि का सांख्यिकीय विश्लेषण

स्रोत	वर्ग योग	df	माध्य वर्ग	F
समूहों के बीच	2310.45	2	1155.22	4.58*
समूहों के भीतर	74980.30	297	252.46	
कुल	77290.75	299		

* 0.05 स्तर पर सार्थक

निष्कर्ष

अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षक प्रोत्साहन का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। उच्च स्तर का शिक्षक प्रोत्साहन प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि मध्यम एवं निम्न स्तर के प्रोत्साहन समूहों की तुलना में अधिक पाई गई। इससे यह सिद्ध होता है कि शिक्षक का सकारात्मक व्यवहार विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता में निर्णायक भूमिका निभाता है।

शैक्षिक उपयोगिता

- प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों से शिक्षकों को यह समझने में सहायता मिलेगी कि प्रोत्साहनात्मक शिक्षण-व्यवहार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को किस तरह से प्रभावी रूप से बढ़ा सकता है।
- अध्ययन में माध्य एवं मानक विचलन के माध्यम से विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति का तुलनात्मक आकलन संभव हो पायेगा।
- अध्ययन में एक-मार्गीय विचरण विश्लेषण द्वारा शिक्षक प्रोत्साहन के विभिन्न स्तरों के प्रभाव को वैज्ञानिक आधार प्राप्त होता है।
- अध्ययन विद्यालय प्रशासन को शिक्षण-प्रक्रिया में सुधार हेतु सांख्यिकीय साक्ष्य उपलब्ध कराता है।
- शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रोत्साहनात्मक रणनीतियों के समावेशन का मार्ग प्रशस्त होगा।
- प्रस्तुत शोध शिक्षा-मनोविज्ञान के क्षेत्र में सांख्यिकीय विश्लेषण आधारित अनुसंधानों को प्रोत्साहित करता है।

सुझाव

1. शिक्षकों को कक्षा-कक्ष में सकारात्मक एवं प्रेरणादायक वातावरण निर्मित करने हेतु प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।
2. विद्यालयों में शिक्षक प्रोत्साहन से संबंधित नियमित मूल्यांकन व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए।
3. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के विश्लेषण में माध्य एवं मानक विचलन का नियमित प्रयोग किया जाना चाहिए।
4. विभिन्न स्तरों के शिक्षक प्रोत्साहन के प्रभाव को जानने हेतु एक-मार्गीय विचरण विश्लेषण जैसी तकनीकों को अपनाया जाना चाहिए।
5. भविष्य के शोधों में अन्य सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग कर अध्ययन को और व्यापक बनाया जा सकता है।
6. शिक्षा-नीति निर्धारकों को शिक्षक प्रोत्साहन को शैक्षिक गुणवत्ता का अनिवार्य घटक मानना चाहिए।

REFERENCES

1. Hattie, J. (2009). Visible learning: A synthesis of over 800 meta-analyses relating to achievement. Routledge.

2. Wentzel, K. R. (2010). Students' relationships with teachers as motivational contexts. *Educational Psychologist, 45*(3), 135–150.

3. Ryan, R. M., & Deci, E. L. (2000). Intrinsic and extrinsic motivations: Classic definitions and new directions. *Contemporary Educational Psychology, 25*(1), 54–67.

4. Singh, A. (2022). Teacher encouragement and academic achievement of secondary school students. *Journal of Educational Studies, 14*(2), 77–85.

5. Shukla, R. (2020). Teacher motivation and students' academic performance. *Indian Journal of Educational Research, 9*(1), 61–68.

6. Kumar, S., & Verma, P. (2021). Teacher support as a predictor of academic achievement. *International Journal of Indian Psychology, 9*(3), 102–110.